RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 38 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 2 दिसम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 38, 29 नवम्बर-2 दिसम्बर 2018 तदनुसार 17 मार्गशीर्ष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

शरीर पतनशील है

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तव शरीरं पतयिष्णवर्वन्तव चित्तं वातऽइव ध्रजीमान्।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति।।

-यजुः २९।२२

शब्दार्थ-हे **अर्वन्** = जीवात्मन्! **तव** = तेरा **शरीरम्** = शरीर **पतयिष्णु** = पतनशील, विनाशवान् है। **तव** = तेरा **चित्तम्** = चित्त **वातः+इव** = वायु के समान **ध्रजीमान्** = चञ्चल है, वेगवान् है। **तव** = तेरी **जर्भुराणा** = अत्यन्त पुष्ट **शृङ्गाणि** = इन्द्रियाँ **पुरुत्रा** = बड़े-बड़े **अरण्येषु** = जङ्गलों में-विषय-वनों में **विष्ठिता** = स्थित हुई **चरन्ति** = विचरती है।

व्याख्या-वेद कल्याणी माता की भाँति जीव का उद्धार करने के लिए अनेक प्रकार से प्रबोध के उपाय प्रस्तुत करता है। कहीं उसे **'ध्रुवं ज्योतिः'** कहकर मृत्यु के भय से मुक्त करता है, कहीं इसके शरीर की अनित्यता का वर्णन करके संसार की असारता दिखा इसे मोहपाश से छूटने की प्रेरणा करता है। इस मन्त्र में शरीर की विनाशिता का ज्ञान कराने के लिए कहा-**तव शरीरं पतयिष्णवर्वन्**-हे आत्मन्! तेरा शरीर पतनशील है। इसका शील=स्वभाव ही पतन है, नाश है, स्वभाव के सम्बन्ध में ऋषियों का मत है-**'स्वभावो ह्यनपायी वै'**= स्वभाव तो नहीं बदलता। जब स्वभाव नहीं बदल सकता, तब एक दिन अवश्य ही इसका नाश होगा, भले ही पर्याप्त दीर्घकाल तक शरीर बना रहे, किन्तु इसका सदा बना रहना असम्भव-सर्वथा असम्भव है, अतः ज्ञानी जन शरीर में एकान्त रति नहीं करते, वरन् उदास हो जाते हैं।

शरीर के साथ लगा मन तो सबसे चञ्चल है। वेद में अनेक स्थानों पर उसे जविष्ठ कहा है। यहाँ भी उसी प्रकार कहा गया है कि वह **'वात इव ध्रजीमान्'**= वायु की भाँति चञ्चलतर है। शरीर पतनशील है, सदा सङ्ग रहने वाला नहीं है। मन भी चञ्चल है, सदा इधर-उधर भागता रहता है, अर्थात् ये दोनों विश्वासयोग्य नहीं हैं। जाने कहाँ और कब सङ्ग छोड़ दे! बुद्धिमान् मनुष्य इस रहस्य को जानकर इनसे सिद्ध होने वाले कार्यों को शीघ्रातिशीघ्र सम्पादन करते हैं। क्या इन्द्रियाँ आत्मा को पूरा सहयोग दे रही है? वेद इसका समाधान अद्भुत ढङ्ग से करता है-

तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति।

तेरी इन्द्रियाँ अनेक जङ्गलों में स्थित होकर पुष्ट हुई विचरती हैं, अर्थात् इन्द्रियाँ भी आत्मा से विमुख होकर विषय-वनों में विचर रही हैं। उपनिषत् ने कहा-**'इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँस्तेषु गोचरान्'** [कठो०]-ज्ञानीजन इन्द्रियों को घोड़े मानते हैं और विषयों को उनके चरने का स्थान।

उपनिषत् के गोचर को वेद ने **अरण्य**= जङ्गल कहा और कहा कि वे **'पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति'**= वे पुष्ट हुई अनेक जंगलों में विचरती हैं या चर रही हैं। प्रत्येक इन्द्रिय का विषय पृथक्-पृथक् है। नेत्र का विषय है रूप, रूप अनेक प्रकार के हैं। रसना का विषय रस है, रस भी नाना हैं। घ्राण=नाक का विषय गन्ध है, गन्ध भी अनेकविध हैं। कान को शब्द बाँधता है, शब्द के भी विविध भेद हैं। त्वचा को सुख देने वाला स्पर्श भी एक प्रकार का नहीं है। फिर मन के विषयों का परिशीलन मन की भाँति दुरूह है। इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों को ही ग्रहण कर सकती हैं, इस बात को कहने के लिए 'विष्ठिता' विशेषणपद का प्रयोग हुआ है, अतएव नाना वनों की सत्ता का निर्देश हुआ है। आत्मन्! तेरा इनमें कोई भी पक्का साथी नहीं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) जालन्धर की अन्तरंग सभा दिनांक 11 नवम्बर 2018 के निश्चयनुसार सभा के तत्वावधान में आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन **3 फरवरी 2019** रविवार को बरनाला में करने का सर्वसम्मति से निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 3 फरवरी 2019 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में बरनाला में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें। इससे पूर्व भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में और 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में सफल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन कर चुकी है इसलिये सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन है कि इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारने का कष्ट करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

वेद और पर्यावरण संरक्षण

ले.-डा. निर्मल कौशिक, फरीदकोट

ऋग्वेद भारतीय संस्कृति का दर्पण है। ऋग्वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ माना जाता है। ऋग्वेद में पर्यावरण की भी विशद चर्चा है। वस्तुत: वैदिक कालीन साहित्य में वर्णित पर्यावरण का व्यापक प्रभाव रहा है। आज प्रदूषण के कारण भौगोलिक परिवेश परिवर्तित हो रहा है। अब भी समय है कि हमें मानव कल्याण हित भारतीय संस्कृति के आलोक में पर्यावरण को सुरक्षित और उपयोगी बनाने हेतु वेदों, संहिता ग्रंथों, उपनिषदों में वर्णित पर्यावरण सम्बंधी ज्ञान का लाभ ग्रहण करना चाहिए। यही ज्ञान पर्यावरण चेतना का मूलाधार है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में पुरुष और प्रकृति के अन्योन्यसम्बंधों के विषय में कहा गया है।

यद्पिण्डेतत् ब्रह्माण्डे।

पर्यावरण चेतना का एक ऐसा काल भी आया जब भारतीय समाज में समरसता लुप्त हो रही थी और प्रदूषित तत्वों में वृद्धि हो रही थी। ऐसे समय में लोग आन्तरिक संकट से निपटने के लिए वनों का आश्रय लेने लगे थे। तब उस समय के मनुष्यों और योगियों ने अपने वनवास के अनुभवों को उपनिषदों और आरण्यकग्रंथों में लिपिबद्ध किया, यहीं से पंचवटी की कल्पना साकार हुई। आश्रम धर्म की व्यवस्था हुई तथा पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता मिली। प्रकृति पूजन के रूप में वृक्षों, नदियों, पर्वतों, पूषा, वरुण, रुद्र, मरुत, पर्जन्य, चन्द्र और पृथ्वी आदि की देवता के रूप में पूजा होने लगी।

हमारा पौराणिक साहित्य न केवल मानवीय स्तर पर वातावरण की शुद्धता का पक्षधर है अपितु पशु-पक्षियों तथा पेड़-पौधों आदि के अस्तित्व का भी साक्षी रहा है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत जीव-जन्तु, नदियाँ, पर्वत, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों सभी महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। हमारे पूर्वज ऋषि-मुनि ज्ञानवान वैज्ञानिक और आध्यात्मिक शोधकर्ता भी थे। उनकी आध्यात्मिक क्षमता इतनी प्रबल थी कि वे पृथ्वी पर रहते हुए भी लोक परलोक की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेते थे। उन्होंने ही हमें बताया कि इस सृष्टि की रचना पंच महातत्वों पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से हुई है। इन्हीं तत्वों से हमारा भौतिक शरीर निर्मित है। सम्पूर्ण सृष्टि के कण-कण में ईश्वरीय सत्ता परिव्याप्त है।

जयशंकर प्रसाद कामायनी महाकाव्य में कहते हैं वह सत्ता (शक्ति) ही सृष्टि की नियामक है।

''सिर नीचा कर जिसकी सत्ता, सब करते स्वीकार यहाँ।''संतुलन बनाए रखने के लिए पुराणों और वेदों में यज्ञ करने के लिए कहा गया है। इससे प्रदूषण व्याप्त नहीं होता और वातावरण की शुद्धता बनी रहती है। यज्ञ करने से वर्षा-चक्र नियमित रहता है और अनाज पैदा होता है। यज्ञ प्रकृति में वैज्ञानिक प्रक्रिया बनाए रखने में सहायक होते हैं। गीता में भी कहा गया है।

अन्नात् भवन्ति भूतानि पर्जन्याद् अन्न संभवः।

यज्ञात् भवति पर्जन्यो यज्ञ, कर्म समुद् भवः।। 3/14 श्रीमद्-भगवद्गीता

अर्थात-सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है, वर्षा यज्ञ से होती है और यज्ञ कर्मों से उत्पन्न होता है। भारतीय संस्कृति मानवीय मूल्यों के संवर्धन, उन्नयन एवं पल्लवन का मूलाधार मानी जाती है। इसीलिए भारत विश्वगुरू के पद पर आसीन हुआ। भारतीय सनातन संस्कृति आज भी अमर है। अन्य संस्कृतियां कुकुरमुत्ता की तरह उगी और नष्ट हो गईं। कवि इकबाल ने खूब कहा है ''यूनान मिस्र रोमा सब मिट गए जहां से, कुछ बात है कि हस्ती मिटी नहीं हमारी।''

हमारे ऋषियों और मनीषियों में अपना जीवन प्रकृति की गोद में ही बिताया। उन्होंने अपने वनवासी जीवन के अनुभवों को पुराणों उपनिषदों और आरण्यक ग्रन्थों में लिपिबद्ध किया। पर्यावरण संरक्षण हेतु नदियों, पर्वतों, वृक्षों, जीव जन्तुओं पशुओं आदि की पूजा का विधान किया गया। इसे धर्म और आस्था के साथ जोड़ा गया और यह एक परम्परा के रूप में मानव जीवन के साथ जुड़ जाए। आज भी हमारे पर्वों और उत्सवों के रूप में यह परम्पराएँ रीति रिवाज बनकर भारतीय संस्कृति की अमिट छाप हमारे जीवन पर छोड़ जाती है। फलत: हम आज भी नदियों, पर्वतों, पशुओं, पक्षियों, सूर्य, चाँद, पृथ्वी, वायु आदि को देवता के रूप में पूजा करते है।

जिस प्रकार प्रदूषित जल में मछली नहीं रह सकती उसी प्रकार प्रदूषित संस्कृति में व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता। भारतीय संस्कृति का आधार शुचिता, योग, पवित्रता, संस्कार, संवेदना, करुणा, प्रेम, त्याग, संयम, एकाग्रता, वसुधैव-कुटुम्बकम् सर्वेभवन्तु सुखिना है। हमारा भारतीय परिवार एक सांस्कृतिक ईकाई है, संस्कारों की पाठशाला है।

स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो के अपने भाषण में कहा था मैं वहां का नागरिक हूँ, जहाँ चरित्र और नैतिकता मनुष्य का निर्माण करते हैं। पर्यावरण शब्द परि (उपसर्ग) में आवरण शब्द के संयोग से बना है। जिसका अर्थ है आवरण का बाह्यरूप। जब व्यक्ति ने पर्यावरण में प्रकृति में प्रवेश किया तो उसे अपने व्यक्तित्व के विकास का वातावरण दिखाई दिया तब उसे पर्यावरण के प्रति प्रेम और कर्तव्य का अनुभव हुआ। महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण में लक्ष्मण जी राम से कहते हैं, जननी जन्मूभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी। रामायण और महाभारत में स्थान पर प्रकृति चित्रण की छटा बिखरी हुई है। महाभारत में भी पर्यावरण के महत्व को दर्शाते हुए महर्षि व्यास ने अनेक वृक्षों, पेड़ों, पौधों वनस्पतियों का वर्णन किया है।

संस्कृति ही विकास को निबंधात्मक दिशाओं में जाने से रोकती है। महादेवी वर्मा के शब्दों में प्रकृति यदि गति का उन्मेष है तो संस्कृति उस गति की दिशा निबन्ध संयमित मर्यादा का पर्याय है।

संस्कृति का अर्थ है मन और आत्मा की विशालता और व्यापकता।

हमारे सभी धर्म ग्रन्थों में प्रकृति चित्रण करने के साथ-साथ वृक्षारोपण करने और उनकी सुरक्षा करने को मोक्ष कारक और स्वर्ग प्रदान करने वाला बताया गया है। वराह पुराण में वृक्षारोपण को अत्यन्त दृढ़ता प्रदान की गई है। एक पीपल, एक नीम, एक बेर, दस फूल देने वाला वृक्ष, दो अनार, दो सन्तरे, पांच आमों का रोपण करने वाला कभी भी नरकगामी नहीं होता।

भारतीय संस्कृति मानवीय मूल्यों का संवर्धन उन्नयन एवं पल्लवन के रूप में जानी जाती है। इसीलिए भारत विश्वगुरू के पद पर आसीन हुआ।

पर्यावरण की शुद्धि में यज्ञ के महत्व को स्वीकार किया गया। वनस्पतियों की आहुति से वातावरण शुद्ध होता है तथा वर्षा की सम्भावना से अनाज वृद्धि होती है। अथर्ववेद

सृष्टि के आरम्भ में ही मानव का उद्भव प्रकृति की गोद में हुआ। पर्यावरण शब्द सामान्य अर्थों में हमारे चारों और फैले हुए प्राकृतिक परिदृश्यों तथा प्रकृति के कार्यकलापों का प्रतीक है जिनसे मानव जीवन प्रभावित होता है।

वेद में वर्णित शान्ति पाठ पर्यावरण संरक्षण हेतु समस्त शुभकार्यों से पूर्व की गई स्तुति है तथा प्रकृति को शान्त रहने की प्रार्थना है। चन्द्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में प्रकृति से छेड़छाड़ करने वालों को दण्ड दिया जाता था। महाराज सम्राट अशोक ने कलिंग के युद्ध के बाद बौद्ध धर्म धारण करने के साथ ही कुएं खुदवाए, तालाब बनवाए साथ ही सड़क के दोनों और छायादार वृक्ष भी लगवाए।

पाँचवां वेद कहा जाने वाला आयुर्वेद सम्पूर्ण रूप से प्राकृतिक स्रोतों पेड़ पौधों, जड़ी बूटियों की खोज पर आधारित एक सफल चिकित्सा पद्धति है। भारतीय संस्कृति में पेड़ पौधों की पूजा का विधान है। इससे इहलोक में ही नहीं परलोक में भी फल प्राप्ति होती है। कहा जाता है कि एक पीपल का पेड़ लगाने से मनुष्य को दस पुत्रों की सन्तान का फल मिलता है। हम आज भी पीपल, तुलसी आदि की पूजा करते हैं।

आज अपसंस्कृति और पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव के कारण हम प्रकृति के असन्तुलन और पर्यावरण-प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं जबकि हमारे अतीत के सांस्कृतिक परिवेश में पर्यावरण की सुरक्षा का अमूल्य भण्डार है। विदेशी लोग हमारे वेदों में वर्णित ज्ञान का लाभ उठा रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

दानवीर एवं कर्मवीर–स्व. पं. श्री हरबंसलाल शर्मा जी

भारतभूमि ऋषियों, मुनियों, वीरों, त्यागियों की भूमि रही है। यह वह भूमि है जहाँ विश्व के प्रथम प्रकाश की किरण अवतरित हुई। यहीं से प्रेरणा लेकर विश्व के मानवों ने अपने चरित्र को उदात्त बनाने का प्रयास किया। समय-समय पर मानवता के उद्धार के लिये इस भूमि पर महापुरूषों का आगमन हुआ। ऐसी दिव्य विभूतियों से यह देश भरा पड़ा है।

ऐसी दिव्य और महान् विभूतियों में 2 फरवरी 1920 को एक धार्मिक परिवार श्री पं. कर्मचन्द शर्मा जी के यहाँ पं. हरबंसलाल शर्मा जी का जन्म हुआ। यह एक ऐसा परिवार था जिसमें धार्मिक भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। श्री पं. हरबंसलाल शर्मा जी की आर्य समाज और गुरूकुल के प्रति अगाध श्रद्धा थी। उनकी यह मान्यता थी कि कोई भी बालक आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण पढ़ने से वञ्चित नहीं रहना चाहिए। इसलिये वे गुरूकुलों में जाकर भरपूर दान दिया करते थे। संभवत: यह भी एक कारण था कि लोग उन्हें संस्था के सर्वोच्च पदों पर बैठाना अपना गौरव समझते थे।

भारत विभाजन के पश्चात पं. हरबंसलाल शर्मा जी का परिवार कराची से जालन्धर चला आया और जालन्धर शहर में रहने का निश्चय किया। पं. हरबंसलाल शर्मा जी भी एयरफोर्स की नौकरी छोड़कर परिवार सहित जालन्धर आकर रहने लगे। अब परिवार के सामने आजीविका की समस्या थी। इन्होंने यहां साईकिल के पुर्जे बनाने का कार्य शुरू किया। यहीं से इनकी जीवन यात्रा प्रारम्भ हुई एक छोटी सी दुकान से शुरू किया हुआ कारोबार आज एच. आर. इन्टरनैशनल ग्रुप आफ इण्डस्ट्रीज का रूप ले चुका है। आज इनके द्वारा स्थापित कारोबार एक विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुका है। इस प्रकार प्रारम्भ में एक बहुत छोटी पूंजी से शुरू किया गया कार्य आज एक साम्राज्य का रूप ले चुका है। यह तो रही उनकी आर्थिक यात्रा की कहानी जो किसी भी व्यवसायी के लिये प्रेरणा का स्रोत हो सकती है। परन्तु पं. हरबंसलाल शर्मा जी के जीवन का इससे भी अधिक उज्जवल एक पक्ष और है। इस प्रकार भौतिक उन्नति तो औरों ने भी की होगी परन्तु पं. हरबंसलाल शर्मा जी के जीवन में भौतिकता के साथ-साथ आध्यात्मिकता का भी समावेश था।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज दस नियमों में से नौवें नियम को पं. हरबंसलाल शर्मा जी ने अपने जीवन में धारण किया हुआ था जिसमें यह प्रेरणा दी गई है कि-प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। अपनी उन्नति से संतुष्ट न रहते हुए सहानुभूति के साथ दूसरों की सहायता करना कोई इनके जीवन से सीख सकता है। महर्षि दयानन्द द्वारा दिये गये इस मूलमन्त्र को जिस रूप में पण्डित जी ने अपने जीवन में उतारा था वह न केवल सराहनीय है, अपितु अनुकरणीय भी है।

इतना दान देने पर भी उन्हें अहंकार छू तक नहीं गया था। न जाने उनके जीवन के कितने ही प्रसंग हैं जहां पर उन्होंने दिल खोलकर दान दिया। नीतिकार मानते हैं कि धन की तीन अवस्थाएं होती हैं- दान, भोग और नाश। जो व्यक्ति धन का न तो दान करता है और न भोग करता है उसके धन की तीसरी अवस्था होती है अर्थात् उसका धन नष्ट हो जाता है। इन तीन अवस्थाओं में भी धन की सर्वश्रेष्ठ गति दान मानी गई है। पं. श्री हरबंसलाल शर्मा जी धन की श्रेष्ठ गति दान को ही मानते थे, इसलिये उनके जीवन का मूलमन्त्र भी दान करना रहा है। वेद स्पष्ट रूप से कहता है कि जो मनुष्य अन्न, धन व सम्पत्ति का स्वामी बनकर उससे किसी ज्ञान देने वाले विद्वान् का पोषण नहीं करता, उसका अन्न, धन, सम्पत्ति पाना व्यर्थ है। वह केवल अकेले खाकर पापी बनकर इस संसार से चला जाता है। वेद का यह वाक्य केवलाघो भवति केवलादी पं. हरबंसलाल शर्मा जी के जीवन का आदर्श था, उनके जीवन का प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक रहा है। इसी मार्ग पर चलकर वे इस दिव्य यश के भागी बने हैं। यह धन तो रथ के पहिये की भांति आता-जाता रहता है, लेकिन जो इन धनों का अहङ्कार न करता हुआ अपने कर्त्तव्य पथ पर चलता रहता है, वही इस संसार में महान् कहलाता है। वे प्राय: कहा करते थे कि मैं एक पोस्टमैन हूँ। भगवान मुझे बाँटने के लिये देता है और मैं उसको बाँट देता हूँ।

इस संसार में प्राय लोग लेने आते हैं परन्तु पं. हरबंसलाल शर्मा जैसा विलक्षण व्यक्तित्व लेना नहीं देना जानता है, यह दान की ही महिमा है। जो देता है, वहीं देवता है। पं. हरबंसलाल शर्मा जी इस युग के देवपुरूष ही थे। वे निरन्तर कई वर्षों तक गुरूकुल करतारपुर के प्रधान रहे और उनकी छत्रछाया में गुरूकुल ने अनेक उन्नति के सोपान पार किये। पं. हरबंसलाल शर्मा जी ने कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पद तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान पद को सुशोभित किया। अपने तप, और त्याग के कारण इन्हें गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद पर प्रतिष्ठित किया गया। पं. हरबंसलाल शर्मा जी का सारा परिवार महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति समर्पित है। इस परिवार की यज्ञ के प्रति अगाध श्रद्धा है। अपने घर में इन्होंने एक सुन्दर यज्ञशाला का निर्माण करवाया था जिसमें पूरा परिवार बैठ कर नित्य प्रति श्रद्धा भावना से यज्ञ किया करता था।

यह संसार का अटल नियम है कि जो आया है, उसे एक न एक दिन जाना ही है। भौतिक रूप से भले ही हमारे बीच में नहीं है परन्तु अपने यश रूपी शरीर के द्वारा आज भी विद्यमान हैं। 2 दिसम्बर 2002 को अपने पांचभौतिक तत्वों से बने नश्वर शरीर को त्याग कर इस संसार से विदा हो गये। वे माता-पिता सफल माता-पिता हैं जिनकी संतान यश की दृष्टि से उनसे भी आगे निकलती है। यह सौभाग्य की बात है कि पं. हरबंसलाल शर्मा जी के तीनों सुपुत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा, श्री सुरेश शर्मा व श्री नरेश शर्मा अपने कार्यों के द्वारा अपने कुल की कीर्ति को आगे बढ़ा रहे हैं। आज भी यह परिवार अपने पूज्य माता-पिता के द्वारा बताये गये पदचिह्नों पर चलते हुए यज्ञ के प्रति, धर्म के प्रति, गौ सेवा के प्रति, गुरूकुलों के प्रति तन,मन व धन से समर्पित है। प्रतिदिन यह परिवार यज्ञ करता है, गौसेवा करता है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब स्व. पं. हरबंसलाल शर्मा जी को उनकी पुण्यतिथि पर शत-शत नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

ले.-स्वामी शिवानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

खाज-१. बरगद के पत्तों की राख सरसों के तेल में मिलाकर लगायें।

२. अरहर की पत्ती पीस कर दही में मिलाकर लेपन करें।

३. ताजा नारियल का रस तथा टमाटर का रस मलें।

खरबा-बरसात में पैरों में खरबा हो जाते हैं बड़े का दूध लगा लें।

खट्टे डकार-तुलसी के पत्ते सूखे हुये २० ग्राम, अजबायन २० ग्राम, नमक सेंधा १ ग्राम तीनों को घोंट कर पिलायें।

गठिया-१. सहजना के बीजों का तेल तथा इसकी जड़ अदरक का चूर्ण कर सरसों का चूर्ण पीसकर लेप करें अनुभूत हैं।

२. सोंठ, गिलाप दोनों समभाग लेकर उनका चूर्ण बनाकर ३ ग्राम दवा गर्म पानी के साथ खाएं।

३. असगन्ध, सोंठ, विधारा, सुरंजान मीठी, बड़ी हरड़ का छिलका सालम मिश्री सब सम लेकर चूर्ण बना लें उतनी मिश्री।

४. निबोली का चूर्ण खुर्बानी समभाग मिलाकर गठिया स्थान पर लेप करें।

खुजली-१. सूखे आंवले का चूर्ण जैतून के तेल में मिलाकर गाढ़ा लेप करें। खुजली जाती रहेगी।

२. अमर बेल को पानी में पीसकर शरीर पर लेप करें। खुजली दूर होगी।

खुरसाड़ा-१. यह रोग पशुओं को होता है। वेक्सीलम २०० पोटेन्सी की ४,४ गोली सुबह शाम देने से रोग नहीं रहता।

२. मरकोर २०० पोटेन्सी की ४,४ गोली दिन में २ बार २ दिन खिलायें।

खुर पकने पर तारपीन का तेल लगायें। यह दवायें होम्योपैथिक दुकानों पर मिलती है।

गैस-चित्रक की जड़ की छाल, सोंठ, नीबू लें। छाल और सोंठ को कूट पीस छान चूर्ण बना लें नीबू का रस मिला शीशी में रख लें भोजन के १ घन्टे बाद गुनगुने जल के साथ ५ ग्राम १ कप पानी का प्रयोग करें। (सोंठ, पीपल, काली मिर्च) त्रिकुटा भी मिला लें।

गले में खराश होना (खादिरादि बटी)-खर सार १०० ग्राम चिकनी सुपाड़ी कपूर, जायफल, शीतल मिर्च एवं छोटी इलायची २०, २० ग्राम सबको कूट छान पीसकर पानी के छींटे देकर मटर जैसी गोली बना सुखाकर शीशी में रख लें। १. १ गोली दिन में ५, ६ बार चूसें।

गन्दे विचार-फिटकरी सफेद बारीक पीसकर ५ ग्राम रख लें। २०० ग्राम दही गाय का लें उसमें ३ ग्राम फिटकरी मिलाकर खायें। १ घन्टे बाद गाय का मक्खन ५० ग्राम खायें। पागल पन, गन्दे विचारों को दूर करने के लिए अति लाभप्रद है।

गर्भिणी के वमन पर-नारियल की जटा के भस्म २. ग्राम, ५ ग्राम शहद में चाटें।

गर्भाशय के रोग-१. शिवलिंगी के बीज का चूर्ण ३ ग्राम गाय के दूध के साथ लें।

२. गर्भाशय सम्बन्धी समस्त रोगों की रामबाण औषधि है।

गला बैठना-१. पान की जड़ और मिश्री का सेवन करें।

२. कबाब चीनी मुख में रखकर चूसें।

३. कुर्लिजन और मुलहटी दोनों समभाग लेकर कपड़छन चूर्ण बना लें २, २ ग्राम चूर्ण दिन में ५ बार चूसे।

४. काली मिर्च १० घी में गर्म करके खालें दिन में २ बार।

गले में दर्द-१. सोंठ, काली मिर्च, पीपल छोटी तीनों समभाग ले चूर्ण बनायें इससे चार गुना गुड़ मिलाकर बेर के बराबर गोली बनाकर रख लें। १, १ गोली ताजा जल से सेवन करें।

२. अलसी की पुल्टिस वाले घी मिलाकर मुलहठी, गुलवनयशा असली, अजवायन देशी तीनों समभाग लेकर चूर्ण बना लें। २ ग्राम गर्म जल के साथ लें।

गुर्दे का दर्द-१. मक्का के भुट्टे की बाल २० ग्राम २०० ग्राम पानी में उबालें। आधा रह जाए तब मल कर छानकर गुन-गुना पिलायें।

२. मेंहदी के पत्तों का गर्म अर्क पिलायें।

गुल्म (टयूपर)-पके केले के भीतर ४ बूँद पपीते का दूध भर कर खिलाने से रोग ठीक होता है।

गले के घाव-गूलर के पत्ते पीसकर घावों पर लगायें।

गूँगापन-बच १ ग्राम मूसली सफेद २ ग्राम दोनों को शहद में मिलाकर चाटें।

गृधसी-गौ मूत्र में ३० ग्राम कास्टर आयल मिलाकर पिलायें।

रींगन वाय-वकायन की छाल की ठंडाई बनाकर पिलायें।

गुहाजनी (गुहेरी)-१. लोंग को पानी में पीस कर लगायें।

२. छुहारे की गुठली पीस कर लगायें।

३. इमली का बीज पीसकर लगायें।

४. चाकू की नौंक गर्म करके गुहेरी को दाग दें वह बैठ जायेगीं।

गला पड़ जाना-१. जामुन की गुठली बारीक पीसकर शहद में मिलाकर चाटें।

२. शीतल चीनी मुँख में रखकर चूसें।

३. आधा ग्राम हींग का फूला गर्म जल के साथ लें।

गले की सूजन-१. महुआ की गुठली ४ माशा बारीक पीसकर फाक लें ऊपर से गर्म पानी थोड़ा सा पियें।

२. अलसी की पुल्टिस घी मिलाकर बाधें।

गले की खराश-अलसी भुनी हुई २५ ग्राम काली मिर्च ५ ग्राम, हुरमन १० ग्राम तीनों का चूर्ण कर शहद में मिलाकर चाटें।

गुर्दे का दर्द-तुलसी के पत्ते सूखे हुये २० ग्राम अजवायन, २० ग्राम नमक सेंधा, १० ग्राम तीनों का चूर्ण बनाकर गुनगुने पानी के साथ लें। मात्रा ३ ग्राम।

गलागन्ड कंठमाला-१. काय-फल को बारीक गौ मूत्र में मिलाकर लेप करें।

२. छोटी पीपल का चूर्ण ५ ग्राम समभाग शहद मिलाकर चाटें।

गर्भ रोधक-१. सेंधा नमक के केले को तेल में भिगोकर सम्भोग के पूर्व योनि में रखें।

२-धतूरे की जड़ का चूर्ण तेल के फाये में मिलाकर योनि में रखें।

३-नीम का तेल का फाया योनि में रखें।

४-नीम का गोंद ३ ग्राम जल के साथ ऋतु स्नान के बाद सेवन करें।

गन्दे विचार-१. फिटकरी सफेद बारीक पिसी हुई ५ ग्राम, २०० ग्राम गाय के दही में खिलायें १ घन्टे बाद १०० ग्राम गाय का मक्खन खिलायें। पागलपन गन्दे विचार दूर होते हैं।

२. शंख पुष्पी (संखाहली) ब्राह्मी दही का रस ५० ग्राम रोगी को पिलायें।

गर्भ स्थापन-१. नाग केसर का चूर्ण बछड़े वाली गाय के दूध से पिलायें ऋतु स्नान से ८ दिन तक।

२. कायफल और देशी खाँड समभाग कर चूर्ण बनाकर ५ ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करायें।

३-छोटी दुधी गाय के दूध में पीसकर ३ दिन लें।

गर्भ रक्षा (गर्भपात से रक्षा)-जिस स्त्री के बच्चे गर्भ में पूरे नहीं होते उसकी कमर में धतूरे की जड़ लाल कपड़े में बांधनी चाहिये बच्चा होने पर जड़ को फेंक दो।

गर्भाशय की सूजन-हल्दी बारीक पीसकर घी में मिलाकर रुई के फाये में गर्भाशय में रखें।

गैस-१. अदरक का रस, नींबू का रस और शहद तीनों समभाग मिलाकर चटायें।

२. प्रतिदिन छोटी हरड़ चूसें।

गर्भ धारक योग-थोड़ी हल्दी छाया में सुखाकर १ तोला गाय के दूध के साथ लें।

गंजा पुत्र-मोर पंख का चन्दवा लेकर कैची से काटकर गुड़ में लपेट कर गोली बना लो। गर्भ के दूसरे मास में स्त्री का सीधा स्वर चल रहा हो। तब बछड़े वाली गाय के दूध के साथ फाँकने से शर्तिया पुत्र होगा और चाँद जैसा।

गांठदार फोड़ा-बूरा घी मिलाकर फोड़े पर बाधें। फोड़ा फूट जायेगा, गाँठ घुल जायेगी सूजन दूर हो जायेगी।

गर्भिणी के वमन-१. एक ग्राम लोंग पीसकर शहद में चटायें।

२. केवड़े का अर्क बिना पानी मिलाये १, १ घन्टे बाद १, १ तोला दें।

गूलर अनेक रोगों की औषधि है-१. कटे स्थान पर गूलर के पत्तों का रस निचोड़े रक्त बन्द होता है।

२. जले पर पत्ते पीसकर लगा दें छाले नहीं पड़ेगे।

३. गूलर के पत्तों को पीसकर बिच्छू डंक पर बाधें दर्द दूर होगा विष दूर होगा।

४. गूलर के पत्ते पीसकर पानी में पिलाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

५. गूलर के पत्तों का रस पिलाने से सर्प विष में लाभ होता है।

गंज-१. आम के अचार का तेल प्रतिदिन सिर पर मलें।

२. चुकन्दर के पत्ते और हल्दी का लेप करें।

३. हाथी दाँत की राख रसौत बकरी के दूध में मिलाकर मलें।

४. सफेद चिरमटी या लाल हो पानी में पीसकर लेप करें।

५. निवौली को सरसों के तेल में जलाकर लेप करें। (क्रमशः)

मुक्ति के मार्ग बताती श्रीमद् भगवद्गीता

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गतांक से आगे)

गीता के द्वितीय अध्याय में विवेक पर ही चिन्तन हुआ है।

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सत:।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभि:।। गीता 2.16

असत् वस्तु की तो सत्ता नहीं होती है और सत् का अभाव नहीं है। इस प्रकार इन दोनों का ही तत्त्व तत्त्वज्ञानी पुरूषों द्वारा देखा गया है।

अविनाशी तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।

विनाशाय व्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।। गीता 21.17

तू उसको नाशरहित जान जिससे यह सम्पूर्ण जगत् व्याप्त है। इस अविनाशी का विनाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ता: शरीरिण:।

अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत।। गीता 2.18

ये सब नाश रहित अप्रमेय नित्य स्वरूप जीवात्मा के शरीर नाशवान् कहे गए हैं इसलिए हे भारतवंशी अर्जुन। तू युद्ध कर।

ऋग्वेद में भी महर्षि गर्ग ने इसी प्रकार देह और देही में अन्तर बताया है।

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूय:।

अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। गीता 2.20

यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा यह न उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है। क्योंकि यह आत्मा, अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के मरने पर भी यह नहीं मारा जाता है।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूत:।। गीता 2.23

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते। इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त मध्यानि भारत।

अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परिवेदना।। गीता 2.28

हे अर्जुन। सम्पूर्ण प्राणी जन्म से पूर्व अव्यक्त थे और मरने के बाद भी अव्यक्त हो जाते हैं केवल मध्य काल में ही व्यक्त होते हैं फिर ऐसी स्थिति में क्या शोक करना है?

विवेक ही हमें करने योग्य कार्यों को बताता है।

नियतं कुरू कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:।

शरीर यात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येद कर्मण:।। गीता 3.8

तू शास्त्र विहित कर्त्तव्य कर्म कर क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है तथा कर्म न करने से तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।

गीता का कथन है कि हमें कर्म में आसक्त नहीं होना है।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धन:।

तदर्थ कर्म कौन्तेय मुक्त सङ्ग समाचर।। गीता 3.9

यज्ञ के लिए किये जाने वाले कर्मों से अतिरिक्त दूसरे कर्मों में लगा हुआ ही यह मनुष्य समुदाय कर्मों में बंधता है इसलिए हे अर्जुन। तू आसक्ति से रहित होकर ही भलीभांति कर्त्तव्य कर्म कर।

यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 2 में भी इसी प्रकार आसक्ति रहित होकर कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करने को कहा गया है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जीविवेषेच्छतꣳ समा:।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

यहां इस शरीर में ही कर्मों को करते हुए ही सौ वर्षों तक जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए। ऐसे तुम मनुष्य के लिए इसे छोड़ कर कोई दूसरा विकल्प नहीं है जिससे कर्म के दोष लिप्त न हो।

डा. सम्पूर्णानन्द ने पिलानी में गीता भवन का उद्घाटन करते हुए कहा था कि सम्पूर्ण गीता इस मंत्र की व्याख्या ही है।

श्रीमद्भगवद् गीता का मानना है कि कर्म तो वेद से उत्पन्न हुए हैं।

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।। गीता 3.15

कर्म समुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

मनुष्य कर्म तो करे परन्तु उसके फल में आसक्त न होवे।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।

मा कर्मफल हेतु र्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्व कर्मणि।। गीता 2.47

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो। तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

वैराग्य-विवेक की पराकाष्ठा ही वैराग्य को जन्म देती है। स्वामी शंकराचार्य का कहना है कि वैराग्य की सर्वोच्च स्थिति दह है जिसमें साधक को मुक्ति से भी राग नहीं रहता है।

अब षट्क सम्पदा पर विचार करते हैं-

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्पर:।

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। गीता 2.61

उन सम्पूर्ण इन्द्रियों को वश में करके समाहित चित्त हुआ मेरे परायण होकर ध्यान में बैठे, क्योंकि जिस पुरूष की इन्द्रियां वश में होती है। उसी की बुद्धि स्थिर हो जाती है। यह शम का उदाहरण है।

राग द्वेष वियुक्तै स्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।

आत्म वश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति।। गीता 2.64

परन्तु अपने अधीन किये हुए अन्त:करण वाला साधक अपने वश में की हुई राग-द्वेष रहित इन्द्रियों द्वारा विषयों में विचरण करता हुआ अन्त:करण की प्रसन्नता को प्राप्त होता है। यह दम का उदाहरण है जिसमें बलपूर्वक इन्द्रियों को अधर्म में जाने से रोका जाता है।

शनै: शनैरूपरमेद् बुद्ध्या धृति गृहीतया।

आत्म संस्थं मन: कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयते।। गीता 6.25

क्रम-क्रम से अभ्यास करता हुआ उपरति को प्राप्त हो तथा धैर्य युक्त बुद्धि के द्वारा मन को परमात्मा में स्थिर करके परमात्मा के सिवा और कुछ भी चिन्तन न करे। उपरति का अर्थ है बुरी संगत से बचना।

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्।

स्थिर बुद्धि रसम्मूढो ब्रह्म विद् ब्रह्माणि स्थित:।। गीता 5.20

प्रिय को प्राप्त कर हर्षित न हो और अप्रिय को प्राप्त होकर उद्विग्न न हो वह स्थिर बुद्धि संसय रहित ब्रह्म वेत्ता पुरूष परब्रह्म परमात्मा में एकाकी भाव से स्थित है। यह तितिक्षा का उदहरण है।

फिर श्रद्धा का अर्थ है वेदादि शास्त्रों और और आप्त लोगों में पूर्ण विश्वास का होना।

गीता अध्याय 18 श्लोक 71 में श्रद्धा से गीता का अध्ययन करने को कहा गया है।

चित्त को एकाग्र बनाए रखना समाधान कहलाता है।

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।

नि:स्पृह: सर्व कामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा।। गीता 6.18

अत्यन्त वश में किया हुआ चित्त जिस काल में परमात्मा में ही भली भांति स्थिर हो जाती है, उस काल में सम्पूर्ण भोगों से स्पृहारहित पुरूष योग युक्त है ऐसा कहा जाता है।

मोक्ष प्राप्ति की तीव्रतम इच्छा होना मुमुक्षुत्व कहलाता है।

इसके साथ ही अष्टाङ्ग योग द्वारा भी समाधि में परमात्मा के दर्शन करके भी मुक्ति पा सकते हैं। गीता में इसका भी उल्लेख है।

अष्टांग योग के अंग हैं-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि। इनमें से प्रथम पांच योग के बहिरंग है और तीन अन्तरंग हैं। योग शास्त्र में योग की परिभाषा दी गई है-

योगश्चित्तवृत्ति निरोध:। श्रीमद्-गीता में इसी धारणा पर योग विद्या के विषय में विस्तृत कार्य हुआ है। कई श्लोकों के द्वारा योग विद्या को समझाया गया है। यहां पर हम केवल 7 श्लोक देकर विषय को विराम देंगे क्योंकि विषय बहुत लम्बा हो गया है।

गीता अध्याय 6 श्लोक संख्या 11, 12, 13, 14 में आसन और प्राणायाम तक की क्रिया समझायी गई है।

तत्रैकाग्रं मन: कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रिय:।

उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्म विशुद्धये।। गीता 6.12

उस आसन पर बैठ कर चित्त और इन्द्रियों की क्रियाओं को वश में रखते हुए मन को एकाग्र करके अन्त:करण की शुद्धि के लिए योग का अभ्यास करे।

समं कायशिरो ग्रीवं धारयन्नचलं स्थिर:।

सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्।। गीता 6.13

काया और गले को समान अचल धारण करके और स्थिर होकर

(शेष पृष्ठ 7 पर)

भारतीय संस्कृति और समाज

ले.-डॉ. रामफल आर्य मंत्री, आर्य समाज घण्टाघर भिवानी

भारतीय संस्कृति और समाज में प्रचलित उदात्त नैतिक मूल्यों का विशेष महत्त्व है। उन मूल्यों में मनुष्य के सहज प्राकृतिक जीवन को आदर्श मानते हुए श्रद्धापूर्वक समर्पण भाव से जीने की एक आदर्श शैली सर्वत्र, सर्ववर्ग में मान्य रूप में प्रचलित है। भारतीय वाङ्मय तथा यहाँ के तीज-त्यौहार, रीति-रिवाज नैतिकता की आदर्श धूरी पर गतिमान होती आई है। यहाँ की मान्यता में 'ऋत' का विशेष महत्त्व है। यहाँ के सामाजिक जन-प्रतिनिधियों व राज नेताओं ने भी संतों व ऋषियों द्वारा स्थापित उन नियमों की पालना की है। यहाँ के आदर्श चरित्रों में श्री राम व श्री कृष्ण ने उनकी पालना करते हुए समाज में नैतिक मान दण्डों का नवीन स्वरूप भी स्थापित किया है। माता-पिता की आज्ञा शिरोधार्य मानी गई है, एक पत्नी या पतिव्रता, पर नारी लोष्टवत्, आदि कितनी ही आदर्श व नैतिक मान्यताएं सर्वमान्य चली आ रही है। लम्बे समय से प्रतिबन्धित समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी में रखा गया था। मान्य सर्वोच्च न्यायालय ने उसे अपराध की श्रेणी से पृथक करके उसके समर्थकों को एक बहुत बड़ी राहत दी है। इस खुशी में पटाखे छोड़े जा रहे थे। मानों धारा 377 उन पर एक भारी बोझ थी। आज भी भारत से बाहर समलैंगिकता बहुत से देशों में इसे अपराध की श्रेणी में ही रखा गया है। वर्षों से चली आ रही यह बहस 'नैतिकता बनाम समलैंगिकता' में से किसकी आवश्यकता अधिक है। शायद यह अब समाप्त हो जाये।

भारतीय मान्यता में चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और कोक्ष) जीवन के आधार माने गए हैं। धर्म विधि-विधान अर्थ संग्रह उसी के अनुरूप हो, काम का लक्ष्य सन्तानोत्पति और मोक्ष की सिद्धि कराना है। काम तृप्ति धर्मानुकूल हो इसी के लिए परिवार की संस्था को बल मिला है। आज प्रत्येक व्यक्ति परिवार की मर्यादा, उसका निर्वाहन, करने के लिए विवाह के आदर्श बँधन में बंध कर जीवन भर उसकी अनुपालना में रहता है। उस पद्धति से संतानोत्पति करके परिवार, समाज और राष्ट्र को एक आदर्श नागरिक देने की भूमिका अदा करते है। इस विधान के टूटने से सभ्य समाज की कल्पना ही धूमिल हो जाती। आहार, निद्रा, भय और मैथुन प्रत्येक जीव में जन्मजात माने गए हैं। उपरोक्त चारों में तीन तो जीव की रूचि पर छोड़े गए हैं लेकिन पशु और मानव समाज की सभ्यता की पहचान के लिए मैथुन को मर्यादा में बांधा गया है। भोग और भोजन पर्दे का माना गया है। यदि इस पर नीति का अंकुश लगाया जाये तो मर्यादा बनी रहेगी। अंकुश हटाने पर बहुत सी ऐसी बाते हैं। जिनके लिए भी विधि-विधान बेमाने हो जायेंगे। गीताकार ने भी माना है कि इस प्रकार तो वर्णशंकरता ही फैलेगी। सारी जिम्मेवारियाँ खत्म हो जायेगी। मनुष्य इस पर्दे को उठाने पर मंड़ी का सांड बनकर रह जायेगा कि वह अपनी तृप्ति के लिए कहीं भी किसी भी प्रकार का अपराध कर बैठेगा जो समाज के लिए भयानक सिद्ध होगा।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की इसके लिए उन्होंने नियम बनाये। उनमें 10वां नियम कहता है। ''सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतंत्र रहें।'' वैदिक साहित्य में मनुष्य जीवन की औसत आयु 100 वर्ग मानते हुए चार भागों में बांटा गया है। आयु के प्रथम 25 वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम इसमें ब्रह्मचर्य की अनुपालना करते हुए ज्ञानार्जन करना।

25वें वर्ष से 50 वर्ष तक की आयु में गृहस्थ जीवन का निर्वाह मर्यादा सहित करना, फिर 50 से 75 वर्ष तक माता-पिता, गुरु व समाज के ऋण से ऊऋण होने के लिए वानप्रस्थ आश्रम, फिर 75वें वर्ष से बीते जीवन पर्यन्त संन्यास आश्रम का हो जिसमें नैतिकता व आदर्शता का प्रचार घूम-घूम कर समाज में करने का विधान है। महर्षि ने ब्रह्मचर्य पालना पर बड़ा जोर दिया है। मेवाड़ नरेश सज्जन सिंह को तो ब्रह्मचर्य की शक्ति की एक झलक भी दिखा देने थी। जन-जागरण काल में आर्य-समाज ने नैतिक मूल्यों और मर्यादाओं की अनुपालना करते हुए इतना बड़ा आन्दोलन खड़ा किया। आज भी आर्य समाज नैतिकता की रक्षा के लिए संघर्ष रहा है।

आश्रम व्यवस्था की रीति से परिवार नियोजन भी स्वत: लागू होता है। क्योंकि वानप्रस्थी होने से पूर्व मनुष्य की छोटी संतान भी योग्य हो जानी चाहिए। गृहस्थ आश्रम की दो शर्त है, एक आयु 50 वर्ष हो। और दूसरा छोटी संतान योग्य होने पर जो 24वें 25वें वर्ष में योग्य हो पायेगी। इस मूल सिद्धान्त की अनुपालना आवश्यक है। इस प्रकार कोई भी गृहस्थी दो ही संतान पैदा कर सकता है। इसी परम्परा से सभ्य और श्रेष्ठ समाज का निर्माण सम्भव है। अप्राकृतिक, पापाचार, बलात्कारी चिंतन से वासना की तृप्ति मानव समाज को पथ भ्रष्ट ही करेगी। आज केवल मात्र स्त्री जाति पर ही बलात्कार अधिक हो रहे हैं। भविष्य में समलैंगिकता से बच्चे, बूढ़े मनुष्यों के साथ भी बलात्कारी घटनाएं बढ़ेंगी।

वासना की उपासना से मनुष्य मर्यादा हीन, उच्छंखल बनता है। सामाजिक बंधन श्रृंखला ढ़ीली हो जायेगी। रिश्ते-नाते धाराशायी हो जायेंगे। आज जब सभ्य समाज में मद्यपान, तम्बाकू तक वर्जित है तो समलैंगिकता के वितान के नीचे समाज कैसे चल पायेगा भविष्य के गर्भ में छिपा है। कुछ उग्र कामुकों के आगे मानवता घुटने टेक चुका है। स्वतंत्रता पर अंकुश तो और भी बहुत सी बातों पर है क्या उन्हें भी कुछ सिर फिरें लोगों को परोसा जा सकता है। कदापि नहीं। आर्य-समाज का नैतिक दायित्व है कि आर्य मठाधीशों की नींद उखेड़ कर उन्हें राजनैतिक परिपोषण से बाहर लाये। महर्षि ने कभी राजाश्रम नहीं लिया और न ही चाहा। आर्य मित्रों राजनैतिक आश्रम से बाहर निकल कर दुषित राजनीति, जँग लगी सामाजिकता को छोड़ कर समाज में जागृति फैलाये। या फिर राष्ट्रीय जन-जागरण के इतिहास से आर्य समाज की छुट्टी कर दो। महर्षि ने अपने काल में जिन बुराइयों का विरोध किया था उससे भी कई गुणा अधिक बुरा तंत्र फैल रहा है।

आर्य समाज जीरा में दशहरा का पर्व मनाया गया

आज दिनांक 19.10.2018 दिन शुक्रवार को आर्य समाज मंदिर जीरा में बड़ी ही निष्ठा व प्रतिष्ठा के साथ दशहरा का पर्व मनाया गया, जिसमें सर्वप्रथम प्रात: कालीन की शुभ वेला में 9.30 बजे वृहद् यज्ञ का शुभारम्भ किया गया। यज्ञ का कार्य पुरोहित श्री किशोर कुणाल जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न करवाया। तदोपरान्त पुरोहित जी ने दशहरा पर्व पर व्याख्यान दिया जिसमें बताया कि जब तक हम अपने अंदर बैठे काम, क्रोध, लोभ, मोह, इर्ष्या-द्वेष रूपी रावण को इस यज्ञाग्नि में जलाकर समूल नष्ट नहीं कर देंगे, तब तक हर वर्ष रावण के पुतला जलाने से कुछ नहीं होगा। आज हम सभी यह संकल्प करें कि हमें रावण की बुराईयों को छोड़ना है और राम की अच्छाईयों को ग्रहण करना है, तभी इस पर्व को मनाने का मतलब सिद्ध होगा। अन्यथा परिणाम विरूद्ध होगा। उसके बाद इस पर्व की ढेरों सारी बधाईयाँ पुरोहित जी ने सभी आर्य सज्जनों को भेंट की और सभी के धन-धान्य, ऐश्वर्य, बल, बुद्धि, सुख शांति हेतु प्रभु से प्रार्थना करते हुए मंगल कामना की। तत्पश्चात् इस समाज के बड़े ही कर्मठ व ईमानदार प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी ने भी सभी को अपना आशीर्वचनों द्वारा कृतार्थ किया।

अन्तत: शांति पाठ के बाद सभी को मिठाईयाँ प्रसाद के रूप में वितरण किया गया।

मंत्री-सुनील आर्य

पृष्ठ 2 का शेष-वेद और पर्यावरण संरक्षण

हम उनकी संस्कृति को अपना कर निरन्तर पतन की ओर जा रहे हैं। आज हम पश्चिमी संस्कृति और अप संस्कृति के कारण प्रकृति के असन्तुलन और पर्यावरण प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। जबकि विदेशी लोग हमारे वेदों पुराणों और उपनिषदों में वर्णित पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान का लाभ उठा रहे हैं। भारतीय संस्कृति मानवीय जीवन शैली को नियमित और सहज बनाने में सहायक है।

खेद का विषय है हमारा सर्वस्व सभ्यता, संस्कृति, आचरण, भाषा, साहित्य, सब नष्ट हो रहा है। प्रदूषण के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं, हिमालय हिल रहा है, ओजोन की परत समाप्त हो रही है, हम पशु पालने से परहेज करने लगे हैं, पक्षी विषैला अनाज खाकर मर रहे हैं। मगरमच्छ, कछुए, मछलियाँ, रासायनिक जल के कारण मर रहे हैं प्राणियों की अनेक प्रजातियों लुप्त हो रही हैं। आज हम ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण की सुरक्षा के विषय में चिन्ता और चिन्तन करने पर मजबूर हो गए हैं।

हमारे वेदों में भारतीय संस्कृति में पर्यावरण सर्वेक्षण और प्राकृतिक सन्तुलन के अनेक उपाय उपलब्ध हैं। हमें अपने वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। वेदों में वर्णित अनेक प्रकार की जीवन शैलियाँ इसका समाधान सहज ही प्रस्तुत कर सकते हैं। अगर हम अब भी सचेत नहीं हुए तो हमें इसके गम्भीर और भयानक परिणाम भुगतने होंगे। जिस भयानक दौर में से आज हम गुजर रहे हैं इससे भी भयानक और ला-ईलाज दौर निकट भविष्य में आने वाला है। हमें सदा स्मरण रखना चाहिए।

हम बढ़ें प्रकृति की ओर, न हो प्रदूषण का शोर।
हो समृद्धि का फिर भोर, शुद्ध हो पर्यावरण सब ओर।।

पृष्ठ 5 का शेष-मुक्ति के मार्ग बताती...

अपनी नासिका के अग्र भाग पर दृष्टि जमाकर अन्य दिशाओं की ओर न देखता हुआ-

प्रशान्तात्मा विगतभी-र्ब्रह्मचारिव्रते स्थित:।
मन: संयम्य मच्चितो युक्त आसीत मत्पर:।। गीता 6.14

ब्रह्मचर्य के व्रत में भयरहित तथा भली-भांति शांत अन्त:करण वाला सावधान योगी मन को रोक कर परमात्मा में चित्त वाला और ईश्वर परायण होकर स्थित होवे।

यदा विनियतं चित्तमात्म-न्येवावतिष्ठते।
नि:स्पृह: सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा।। गीता 6.18

अत्यन्त वश में किया हुआ चित्त जिस काल में परमात्मा में ही भली भांति स्थिर हो जाता है, उस काल में सम्पूर्ण भोगों में स्पृहा रहित पुरूष योग युक्त है, ऐसा कहा जाता है।

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।
योगिनो यतचितस्य युञ्जतो योगमात्मन:।। गीता 6.19

जिस प्रकार वायु रहित स्थान में स्थित दीपक चलायमान नहीं होता वैसा ही उपमा परमात्मा के ध्यान में लगे हुए योगी के जीते हुए चित्त की कही गई है।

यत्रोपरमते चित्तं निरूद्धं योगसेवया।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्चन्ना-त्मनि तृष्यति।। गीता 6.20

योग के अभ्यास में निरूद्ध चित्त जिस अवस्था में उपराम हो जाता है और जिस अवस्था में परमात्मा के ध्यान से शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि द्वारा परमात्मा को साक्षात् करता हुआ सच्चिदानन्द परमात्मा में ही सन्तुष्ट रहता है।

अब हम एक श्लोक और देकर विषय को विराम देंगे।

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगत कल्मष:।
सुखेन ब्रह्म संस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते।। गीता 6.28

पाप रहित योगी इस प्रकार निरन्तर आत्मा को परमात्मा में लगाता हुआ सुख पूर्वक पर ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति रूप अनन्त आनन्द का अनुभव करता है।

इस प्रकार योग साधना द्वारा योगी परमात्मा के दर्शन का मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

श्रीमद् भगवद् गीता में यह भी बताया गया है कि कौन व्यक्ति योग साधना नहीं कर सकता है परन्तु इस विषय पर विस्तृत चिन्तन जो गीता में हुआ है उस पर विचार न करके केवल इतना कहेंगे कि जो व्यक्ति संयमी नहीं है, जो बहुत शयन करने वाला है, जिसका आहार-विहार यथायोग्य नहीं है वह योग साधना नहीं कर सकता है।

आर्य समाज गुरुकुल विभाग फिरोजपुर में स्वस्ति महायज्ञ का आयोजन

प्रति वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी आर्य समाज मंदिर, गुरुकुल विभाग फिरोजपुर शहर में तीन दिवसीय स्वस्ति महायज्ञ का आयोजन दिनांक 19 अक्तूबर से 21 अक्तूबर 2018 तक बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विष्णुमित्र जी वेदार्थी बिजनौर एवं भजनोपदेशक श्री पंडित राजेश प्रेमी जी जालन्धर एवं पंडित आशी आर्य जी ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

21 अक्तूबर 2018 को मुख्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी विशेष रूप से फिरोजपुर पधारे और स्वस्ति महायज्ञ में आहुतियां प्रदान की। इस अवसर पर सभा महामंत्री जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमें हमेशा स्वाध्याय करना चाहिये। उन्होंने स्वाध्याय के लाभ बताते हुए कहा कि महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि स्वाध्याय के द्वारा मनुष्य अर्थलाभ को प्राप्त करता है। स्वाध्यायशील व्यक्ति आर्थिक उन्नति भी प्राप्त करता है। सभी प्रकार के भौतिक साधनों से सम्पन्न होता है। स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति छल, कपट, स्वार्थ से धन को प्राप्त नहीं करता अपितु पुरूषार्थ करते हुए, वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को धारण करते हुए धन को प्राप्त करता है। शतपथकार के अनुसार अर्थ लाभ का अभिप्राय केवल भौतिक धन तक सीमित नहीं है अपितु स्वाध्याय करने वाले का सामर्थ्य इतना बढ़ जाता है कि वह शब्द की गहराई में जाकर उस अर्थ को निकाल लाता है जिसकी साधारण मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता। निरूक्तकार महर्षि यास्क ने अर्थ का महत्व दर्शाते हुए कहा कि वह व्यक्ति भवन के भार को ढोने वाले खम्भे के समान है, जो वेद को पढ़कर उसके अर्थ को नहीं जानता है। इसके विपरीत जो अर्थज्ञ है, वह समस्त कल्याणों का उपभोग करता है। महर्षि यास्क कहते हैं कि- योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते।। अर्थात् जो अर्थ को जानने वाला है वही समस्त कल्याणों का उपभोग करता है। वह ज्ञान से सब प्रकार की मलिनता को धोकर सभी सुखों को प्राप्त करता है। इस प्रकार महर्षि याज्ञवल्क्य ने स्वाध्याय के लाभों में अर्थलाभ को भी महत्त्व दिया है और स्वाध्याय के द्वारा आर्थिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है।

स्वाध्याय के इसी परम धर्म को समझकर वर्तमान युग-प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने स्वाध्याय को परम धर्म कहा है। उन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम में इसकी स्पष्ट घोषणा की है कि- वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। वेद का पढ़ना स्वाध्याय और पढ़ाना तथा सुनाना प्रवचन कहलाता है जिसे महर्षि याज्ञवल्क्य ने परम श्रम, महर्षि मनु ने परम तप कहा है, उसे ही महर्षि दयानन्द ने परम धर्म कहा है। अत: स्वाध्याय परम-श्रम, परम-तप, व परम-धर्म तीनों ही है। महर्षि दयानन्द के परमधर्म चतुष्टय में से तीन का पढ़ना का स्वाध्याय में, पढ़ाना और सुनाना का प्रवचन में समावेश तो हो गया, परन्तु सुनना परमधर्म फिर भी छूट गया। इस अवसर पर आर्य समाज मंदिर गुरुकुल विभाग फिरोजपुर के पदाधिकारियों द्वारा श्री प्रेम भारद्वाज जी सभा महामंत्री जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

प्रधान आर्य समाज मंदिर फिरोजपुर

आर्य समाज मन्दिर नवांकोट में ऋषि निर्वाण उत्सव मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर नवांकोट में ऋषि निर्वाण उत्सव का आयोजन प्रधान डॉ. प्रकाश चन्द की अध्यक्षता में मनाया गया। सबसे पहले सुबह हवन यज्ञ किया गया। बाद में लक्ष्मण दास जी तिवारी व कुमारी शिवानी आर्य ने भजनों के माध्यम से ऋषि दयानन्द जी के उपकारों का याद कराया जो उन्होंने मानव जाति के भले के लिए काम किये। इन्सान बनों नारी शक्ति का सम्मान करों, वेदों की ओर लोंटों पांखड व अन्धविश्वास को ऋषि दयानन्द ने दूर किया।

इस अवसर पर माडल टाऊन समाज के मंत्री श्री देश बन्धु जी व इन्द्र जीत आर्य अशोक कुमार लहोरिया विजय आनन्द जी, कीमती लाल जी आर्य, सतीश धवन जी, रमन कुमार, योग टीचर्स वीना आनंद जी, माता शंकुलता देवी जी योग प्रिंसीपल योग समति निर्मला देवी व अन्य बहने उपस्थित थी। प्रवचन पंडित बनासी दास जी का हुआ और ऋषि के पद चिन्हों पर चलने की प्रेरणा दी गई। आखिर में शक्ति पाठ के बाद प्रसाद जन संगत में बांटा गया व शहर-व सब जगह सुख शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। **-आर्य समाज मन्दिर नवां कोट**

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

दयानन्द पब्लिक स्कूल, दीपक सिनेमा रोड लुधियाना के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर मुख्यातिथि के तौर पर पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित करते हुये प्रबन्ध समिति के प्रधान श्री संत कुमार जी, प्रबन्धक श्री मुनीष मदान जी एवं प्रिंसीपल महोदय। जबकि चित्र दो में प्रथम आने पर छात्रा को सम्मानित करते हुये महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी। चित्र तीन में बच्चे प्रस्तुति देते हुये।

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड लुधियाना में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह बड़े धूमधाम से दिनांक 18 नवम्बर 2018 को मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) चौक किशनपुरा जालन्धर के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, एम एल ए श्री सुरिन्द्र डावर जी विशेष रूप से उपस्थित हुये। स्कूल की प्रबन्धकीय समिति के सदस्यों एवं प्रिंसीपल जी ने मुख्यातिथि एवं आए हुये सभी अतिथियों का स्वागत किया। बच्चों के द्वारा अनेक सांस्कृतिक एवं रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का शुभारम्भ ओ३म् के ध्वजारोहण से हुआ। इसके पश्चात ज्योति प्रज्जवलित की गई। कार्यक्रम की शुरूआत में छात्राओं द्वारा संगीत की धुन पर गायत्री महामंत्र पेश किया गया। छोटे बच्चों द्वारा स्वागतम् गीत पर नृत्य ने दर्शकों का मनमोह लिया। राजस्थानी डांस, डांडिया, मलवई गिद्दा, भांगड़ा और अनेक कार्यक्रम पेश किये गये जिसे दर्शकों ने खूब सराहा और तालियां बजा कर उनका स्वागत किया। मुख्यातिथि द्वारा 2016–17, 2017–18 में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले छात्रों को पुरस्कार दिये गये। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को मैडल और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने अपने सम्बोधन में अभिभावकों को आह्वान किया कि वह अपने बच्चों की बहुमुखी प्रतिभा को पहचान कर उनको प्रोत्साहित करें। पढ़ाई के साथ–साथ उनके अन्दर नैतिक मूल्यों की स्थापना करें जिससे वे धार्मिक, चरित्रवान और राष्ट्रभक्त बनें। श्री प्रेम भारद्वाज जी ने बच्चों को नशे से दूर रहने की प्रेरणा दी और कहा कि विद्यार्थी जीवन में अपने अन्दर अच्छे गुणों का विकास करना चाहिए। माता–पिता और गुरू की आज्ञा का पालन करना विद्यार्थी का परम कर्त्तव्य है क्योंकि विद्या से विद्यार्थी के अन्दर विनम्रता आती है और विनम्रता से योग्यता को प्राप्त करता है। माता–पिता, गुरू और बड़ों की आज्ञा का पालन करने तथा उनकी सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती है। आप सभी बच्चे इस राष्ट्र का उज्जवल भविष्य हो इसलिए हम आपसे आशा करते हैं कि आप अपने आदर्श चरित्र, अच्छे गुणों के द्वारा इस शिक्षण संस्था का नाम रोशन करेंगे। प्रिंसीपल महोदया द्वारा स्कूल की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई गई और स्कूल की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी गई। स्कूल प्रबन्धकीय कमेटी के प्रधान श्री संत कुमार आर्य, उप प्रधान श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल, श्री मुनीष मदान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की उप प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी, सभा मंत्री श्री विजय सरीन जी, श्रीमती जन रानी आर्या जी ने आए हुये सभी मेहमानों का आभार व्यक्त किया और उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर लुधियाना के गणमान्य व्यक्ति भी पधारे हुये थे।

आर्य समाज फाजिल्का में सम्मान समारोह

आर्य समाज फाजिल्का एवं स्त्री आर्य समाज फाजिल्का के तत्वावधान में 28 अक्तूबर 2018 रविवार को सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ 11 कुण्डीय हवन यज्ञ से हुआ जिसमें शहर के गणमान्य नागरिक, सामाजिक संस्थाएं व मेधावी छात्रों द्वारा आहुतियां प्रदान की गईं। यज्ञ के ब्रह्मा पद को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रोफैसर डा. मनुदेव बन्धु एवं डा. सत्यदेव निगमालंकार ने सुशोभित किया। तत्पश्चात माननीय पद्मश्री विजय कुमार जी चोपड़ा सम्पादक पंजाब केसरी की अध्यक्षता में सम्मान समारोह आर्य समाज फाजिल्का के पूर्व संरक्षक डा. आनन्द अभिलाषी पूर्व नाम सुभाष चन्द्र जसूजा की पुस्तक लक्ष्मी के विमोचन से शुभारम्भ हुआ जिसमें अन्य सम्मानित नागरिकों के अतिरिक्त एस.एस. आर. मैडीकल कालेज मारीशस की प्रिंसीपल डा. नम्रता छाबड़ा, एडवोकेट संजीव मक्कड़ एवं नवीन मक्कड, डा. सिम्मी जसुजा, डा. नवदीप जसुजा, डा. महक, डा. शिवम् साहनी, डा. विदुषी, डा. विदुर आदि पारिवारिक सदस्य उपस्थित थे। शहर के विभिन्न क्षेत्रों से वरिष्ठ नागरिक पूर्व मंत्री पंजाब सरकार चौधरी राधाकृष्ण 88 वर्षीय, शिक्षाविद लाला जगन्नाथ जी 98 वर्षीय, पं. राम निवास शर्मा 87 वर्षीय, श्री केशवानन्द वाट्स 84 वर्षीय, श्री सदा लाल ग्रोवर 84 वर्षीय, प्रो. प्रीतम सिंह बतरा 80 वर्षीय, स्वतंत्रता सेनानी श्रीमती वीरां बाई वधवा 85 वर्षीय, वरिष्ठ एडवोकेट स.जयपाल सिंह संधू 82 वर्षीय, चिकित्सा क्षेत्र से डा. अमरजीत नरूला 80 वर्षीय, प्रशासनिक व समाज सेवी श्री बी.एल. सिक्का 80 वर्षीय को पद्मश्री विजय कुमार जी चोपड़ा द्वारा सम्मानित किया गया। इसी प्रकार सोशल वैल्फेयर सोसायटी, सेवा भारती, मानव कल्याण सभा, अरोड़वंश गीता भवन सोसायटी, शहीदों की समाध सभा आसफवाला, नार्दर्न रेलवे पैंसेजर समिति व ग्रेजुएट वैल्फेयर सोसायटी आदि संस्थाओं को उनके सराहनीय कार्यों के लिये सम्मानित किया गया। इसके साथ ही विभिन्न विद्यालयों से जिन विद्यार्थियों ने 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर अपने अपने विद्यालयों में प्रथम रहे हैं उन्हें भी सम्मानित किया गया। श्री चोपड़ा जी ने आर्य समाज के प्रति निष्ठा एवं आस्थावान कार्यकर्त्ताओं श्री किशोर चन्द्र पुंछी, डा. सुशील वर्मा जी, श्रीमती सुदेश नागपाल, श्रीमती कृष्णा कुक्कड को भी सम्मान पद आर्य विभूति से सम्मानित किया। इसी शृंखला में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से डा. मनुदेव बन्धु एवं डा. सत्यदेव निगमालंकार को आर्य समाज फाजिल्का के उत्थान एवं मार्गदर्शिता के लिये आभार प्रकट करते हुये सम्मानित किया। मंच संचालन आर्य समाज के धर्माचार्य श्री प्रेम नारायण विद्यार्थी एवं श्री प्रफुल्ल चन्द्र नागपाल ने बड़े ही सुचारू रूपेण किया। अन्य गणमान्यों के अतिरिक्त आर्य समाज के मंत्री श्री सत्य स्वरूप पुंछी, कोषाध्यक्ष प्रिंसीपल सुनील नागपाल, वेद प्रकाश शास्त्री, पूर्व प्रधान डा. अमर लाल बाघला, प्रदीप अरोड़ा, श्री सतीश चन्द्र आर्य एडवोकेट, उमेश चन्द्र जी, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती इन्दु जी व अबोहर से शशि छाबड़ा आदि ने समारोह को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। समारोह को सम्बोधित करते हुये श्री चोपड़ा जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की कृपा से नारी उद्धार हुआ तथा उनकी देन से ही आज नारी शिक्षित है।

आर्य समाज फाजिल्का में श्री विजय चोपड़ा जी मुख्य सम्पादक पंजाब केसरी के साथ सम्मानित सदस्य संयुक्त चित्र खिंचवाते हुये

–डा. नवदीप जसुजा
प्रधान आर्य समाज फाजिल्का

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।